Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

लोक प्रशासन के विभिन्न परिप्रेक्ष्य

(Various Perspectives of Public Administration)

B.P.A.C.-131

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Vaishali Gupta*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

लोक प्रशासन के विभिन्न परिप्रेक्ष्य

(Various Perspectives of Public Administration)

Question Paper–June-2024 (Solved) 1
Question Paper–December-2023 (Solved) 1
Question Paper–June-2023 (Solved) 1
Question Paper–December-2022 (Solved) 1
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

वैचारिक और क्लासिकी परिप्रेक्ष्य
(Conceptual and Classical Perspectives)

1. लोक प्रशासन की अवधारणा और महत्त्व 1
(Concept and Significance of Public Administration)
2. वैज्ञानिक प्रबंधन दृष्टिकोण (Scientific Management Approach) 11
3. प्रशासनिक प्रबंधन दृष्टिकोण (Administrative Management Approach) 18
4. नौकरशाही दृष्टिकोण (Bureaucratic Approach) 28

व्यवहारात्मक, प्रणाली व मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य
(Behavioural, System and Socio-Psychological Perspectives)

5. मानव संबंध दृष्टिकोण (Human Relations Approach) 41
6. निर्णय निर्माण दृष्टिकोण (Decision Making Approach) 49
7. प्रणाली और सामाजिक-मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण 59
(Systems and Socio-psychological Approaches)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

लोक नीति परिप्रेक्ष्य
(Public Policy Perspective)

8. लोक नीति दृष्टिकोण (Public Policy Approach) 72

9. नीति विज्ञान दृष्टिकोण (Policy Sciences Approach) 81

सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य
(Political and Social Perspectives)

10. पारिस्थितिकी दृष्टिकोण (Ecological Approach) 89

11. नवीन लोक प्रशासन दृष्टिकोण (New Public Administration Approach) 95

12. लोक चयन दृष्टिकोण (Public Choice Approach) 105

13. लोक हित दृष्टिकोण (Public Interest Approach) 116

समसामयिक परिप्रेक्ष्य
(Contemporary Perspective)

14. नवीन लोक प्रबंधन दृष्टिकोण (New Public Management Approach) 122

15. सुशासन दृष्टिकोण (Good Governance Approach) 131

16. उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण (Post-Modern Approach) 140

17. नारीवादी दृष्टिकोण (Feminist Approach) 150

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

लोक प्रशासन के विभिन्न परिप्रेक्ष्य

(Various Perspectives of Public Administration)

B.P.A.C.-131

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के दीजिए। प्रत्येक भाग से* ***दो*** *प्रश्न अवश्य चुनिए।* ***सभी*** *प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. वैज्ञानिक प्रबंधन के सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-11, 'वैज्ञानिक प्रबंधन के सिद्धांत'

प्रश्न 2. मैक्स वेबर के नौकरशाही उपागम का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-30, 'मैक्स वेबर का नौकरशाही उपागम'

प्रश्न 3. निर्णय-निर्माण के विभिन्न मॉडलों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-51, 'निर्णय निर्माण के मॉडल'

प्रश्न 4. ''प्रशासनिक प्रबंधन दृष्टिकोण को अनेक प्रतिपादकों द्वारा समृद्ध किया गया है।'' टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-18, 'प्रशासनिक प्रबंधन दृष्टिकोण के प्रमुख प्रतिपादक'

भाग-I

प्रश्न 5. लोक नीति के उपागमों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-72, 'लोक नीति दृष्टिकोण का स्वरूप', पृष्ठ-73, लोक नीति दृष्टिकोण का उद्‌गम तथा विकास'

प्रश्न 6. नीति विज्ञान की नई दिशाओं तथा दृष्टिकोण पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-83, 'नई दिशाएं तथा दृष्टिकोण'

प्रश्न 7. नवीन लोक प्रबंधन तथा सरकार की पुनखोज की अवधारणात्मक रूपरेखा की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-123, 'नवीन लोक प्रबंधन की अवधारणात्मक रूपरेखा', पृष्ठ-124, 'सरकार की पुन: खोज'

प्रश्न 8. सुशासन की अवधारणा की व्याख्या कीजिए तथा उसकी विशेषताओं का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-134, प्रश्न 1, पृष्ठ-135, प्रश्न 2

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

लोक प्रशासन के विभिन्न परिप्रेक्ष्य

(Various Perspectives of Public Administration)

B.P.A.C.-131

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के दीजिए। प्रत्येक भाग से* ***दो*** *प्रश्न अवश्य कीजिए।* ***सभी*** *प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. लोक प्रशासन के अर्थ, स्वरूप तथा क्षेत्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'लोक प्रशासन का अर्थ', पृष्ठ-2, 'लोक प्रशासन : स्वरूप एवं क्षेत्र'

प्रश्न 2. वेबर काल के पूर्व के नौकरशाही संबंधित विचारों पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-29, 'वेबर काल के पूर्व नौकरशाही संबंधी विचार'

प्रश्न 3. 'संगठनों के मानवीय पक्ष को उजागर करने में मानव संबंध अध्ययन प्रासंगिक थे।' विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-59, 'परिचय', पृष्ठ-61, 'सामाजिक-मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण'

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से प्रत्येक पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) डगलस मैक्ग्रेगर का सिद्धांत X

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-66, प्रश्न 4

(ख) एफ.डब्ल्यू. रिग्स का सांक्षेत्रिक मॉडल

उत्तर–समाज (कृषक) 'संलगित समाज' और 'आधुनिक समाज' (औद्योगिक) वितर्रित 'समाज' के पास है। पहला कार्यात्मक रूप से विसारित और दूसरा 'कार्यात्मक रूप से विशिष्ट है। इन दोनों ध्रुवीय बिंदुओं के बीच एक माध्यमिक स्तर है–सांक्षेत्रिक मॉडल या 'प्रिज्मीय मॉडल'। रिग्स कहते हैं, "अगर एक समाज अति वर्गीकृत और अच्छी तरह एकबद्ध है, तो वह विवर्तित हैं।"

लेकिन यदि यह वर्गीकृत, खराब और दयनीय तरीके से सूचीबद्ध है, तो इसे वह सांक्षेत्रिक कहता है।

अगर कोई समाज बिल्कुल वर्गीकृत नहीं है, वहां कोई विशेषज्ञ नहीं, हर कोई हर काम कर सकता है, तो मैं इसे 'संलयित व्यवस्था' मानता हूँ। इस प्रकार एक 'सांक्षेत्रिक समाज' की परिभाषा यह हुई–जहाँ भूमिकाओं के विशिष्टीकरण का, उस स्तर पर वर्गीकरण हासिल कर लिया गया है कि आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जा सके, मगर इन भूमिकाओं को संबद्ध करने में असफल रहा है।" रिग्स ने सांक्षेत्रिक समाज की निम्नलिखित विशेषताएं बताई हैं–

1. विषमजातीयता–एक सांक्षेत्रिक समाज में विषमजातीयता वर्ग स्तर काफी ऊँचा होता है अर्थात अलग-अलग तरह की व्यवस्थाएँ, प्रथाएँ और उपागम एक ही समय पर साथ अस्तित्व में रहते हैं।

2. औपचारिकता–एक सांक्षेत्रिक समाज में औपचारिकता का स्तर काफी ऊँचा होता है अर्थात् औपचारिक तौर पर दिए गए सुझाव और प्रभाव में व्यवहार में उतारी गई चीज में प्रथाओं और वास्तविकताओं में एक विसंगति या असमानता होती है।

संक्षेप में, यह सिद्धांत और व्यवहार के बीच के अंतर को बताता है।

3. परस्पर व्याप्ति या अतिव्यापी–एक सांक्षेत्रिक समाज में परस्पर व्याप्ति की परिघटक होती है अर्थात वह स्तर जहां तक एक विवर्तित समाज की औपचारिक रूप से वर्गीकृत संस्थाएं एक संलगित समाज की अवर्गीकृत संस्थाएं एक संलगित समाज की अवर्गीकृत संरचनाओं के साथ सह अस्तित्व में रहती हैं। 'साला' में परस्पर व्याप्ति का अर्थ है–वह चीज, जिसे हम प्रशासनिक व्यवहार कहते हैं और जो गैर-प्रशासनिक

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

लोक प्रशासन के विभिन्न परिप्रेक्ष्य
Various Perspectives of Public Administration

वैचारिक और क्लासिकी परिप्रेक्ष्य
(Conceptual and Classical Perspectives)

लोक प्रशासन की अवधारणा और महत्त्व
(Concept and Significance of Public Administration)

1

परिचय

सरकार के कुशल संचालन की दृष्टि से लोक प्रशासन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विभिन्न सरकारी प्रक्रियाओं तथा प्रशासनिक क्रियाकलापों से संबंधित लोक प्रशासन का अध्ययन एक विषय के रूप में सरकारी कार्यों, लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को समझने के लिए किया जाता है। लोक संस्थानों की दीर्घा सत्ता के केन्द्र से लोक सेवाओं तक फैली हुई है। सत्ता के केन्द्र की दृष्टि से लोक प्रशासन अपने विशेषधिकारों से संबंधित कार्यों की ओर उन्मुख होता है तथा लोक सेवा की संस्था के रूप में जनहित कार्य-संवर्धन तथा लोक सेवाओं की आपूर्ति में सहयोग करता है। वर्तमान लोक प्रशासन का स्वरूप विकससित एवं परिवर्तित दिखाई देता है। लोक प्रशासन, उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण के प्रभावों से अछूता नहीं रहा है। इसके स्वरूप एवं भूमिका में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। पारंपरिक लोक प्रशासन के मॉडल की तुलना में लोक प्रशासन का नवीन मॉडल चुनौतियों का उत्तर देने में अधिक सक्षम है तथा वस्तुओं एवं सेवाओं के कुशल वितरण के लिए राज्य की अपेक्षा बाजार शक्तियों का समर्थन करता है।

विभिन्न देशों में विकास के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अनेक नई तकनीकों को 'प्रबंधन-यंत्र' के रूप में स्वीकार किया गया है। परिणामस्वरूप उपभोक्तान्मुख उद्यमशील संस्कृति का प्रवाह हुआ है, जिसने संगठनों एवं व्यक्तिगत स्वयात्तता का अनुमोदन किया है। इस प्रकार, प्रबंधन-यंत्र के प्रयोग से सद् कार्यों में आरंभ से अंत तक प्रत्येक स्तर पर कुशलता एवं प्रभावशीलता में वृद्धि हुई है। इस प्रकार, लोक प्रशासन का स्वरूप वर्तमान समय में जटिल हो गया है तथा प्रबुद्धता की ओर बढ़ रहा है।

अध्याय का विहंगावलोकन

लोक प्रशासन का अर्थ

प्रशासन की परिभाषा–लोक प्रशासन का अर्थ जानने से पूर्व प्रशासन का अर्थ समझना आवश्यक है। 'एडमिनिस्टर' (Administer) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्दों 'ad+ ministrare' से हुई है, जिसका अर्थ है–

(i) लोगों की देखभाल करना
(ii) कार्यों का प्रबंधन करना।

इस प्रकार, प्रशासन एक सार्वभौमिक गतिविधि है। यह निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए किया जाने वाला प्रयास है। **ई.एन. ग्लैडन** (1952) ने 'इंट्रोडक्शन टू पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन' में प्रशासन को परिभाषित करते हुए कहा है, "प्रशासन एक लम्बा तथा गर्वित शब्द है, जिसका अर्थ अत्यधिक साधारण है–लोगों की चिन्ता करना, उनकी देखभाल करना, मामलों का प्रबंधन करना, जो उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रबंधन सुनिश्चित किया गया है।"

प्रशासन किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए व्यक्तियों एवं सामग्री का संग्रह तथा प्रयोग करता है। विभिन्न संस्थानों एवं जनसमूहों में, जो वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समन्वय एवं सहयोग करते हैं, प्रशासनिक गतिविधियां सम्पन्न की जाती हैं। प्रशासन को निजी और सरकारी दो प्रकार के परिवेशों में बांटा जा सकता है। प्रशासन एक उद्देश्योन्मुख, समन्वयकारी तथा सहकारी क्रिया है, जिसका प्रयोग जनसमूह निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति के लिए करते हैं। यह मानव एवं भौतिक पदार्थों को प्रबंधकों द्वारा निश्चित एवं संगठित रूप से निर्देशित करने का कौशल है, जिस प्रकार इंजीनियर को संरचना निर्यात करने तथा चिकित्सक को बीमारियों को समझने का कौशल प्राप्त होता है। प्रशासन के मुख्य लक्ष्य हैं–उद्देश्योन्मुखता, सुविचारित ध्येय प्राप्ति, मानव तथा भौतिक संसाधनों का निदेशक, सुनिश्चित क्रिया, साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सहयोग, विषयों को व्यवस्थित अवस्था में रखना, संसाधनों का तर्कसंगत प्रयोग, लोगों पर नियंत्रण एवं उनके मध्य समन्वय बनाना तथा कार्य संपूर्ण करना।

प्रशासन का एक व्यापक भाग लोक प्रशासन या नौकरशाही कहलाता है। लोक प्रशासन सरकारी, निजी तथा तृतीयक क्षेत्रों में भी पाया जाता है। लोक प्रशासन का संबंध संगठन एवं लोक कल्याण के लिए लोक नीति के निर्माण तथा कार्यान्वयन से है। एक राजनीतिक परिवेश में कार्य करते हुए लोक प्रशासन, राजनैतिक निर्णय निर्माताओं द्वारा स्थापित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

करता है। लोक प्रशासन के इस स्वरूप को सरकार कहा जाता है। यह लोक नौकरशाही अथवा प्रशासनिक संगठन के चारों ओर घूमता है।

लोक नौकरशाही की मुख्य विशेषताएं हैं–

- नौकरशाही निर्णय निर्माण,
- नीति प्रक्रिया का संगठन तथा विधियां,
- कानून का विस्तृत व्यवस्थात्मक कार्यान्वयन,
- लोक नीति का कार्यान्वयन,
- नागरिक कार्यों का निष्पादन,
- प्रशासनिक शाखा का संचालन,
- राजकीय मसलों/विषयों/कार्यों के संदर्भ में प्रयुक्त कला और विज्ञान,
- सरकार 'क्या' कार्य करती है और 'कैसे'?

चक्रवर्ती एवं **भट्टाचार्य** के अनुसार, "लोक प्रशासन सरकार का क्रियात्मक भाग है, जिसके माध्यम से सरकार लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को प्राप्त करती है।"

लोक प्रशासन को एक क्रियाकलाप तथा एक बौद्धिक अध्ययन दोनों ही रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

लोक प्रशासन : स्वरूप एवं क्षेत्र

लोक प्रशासन के स्वरूप को दो दृष्टिकोणों से व्याख्या की जा सकती है–

(क) प्रबंधात्मक दृष्टिकोण तथा

(ख) एकात्मक दृष्टिकोण।

(क) प्रबंधात्मक दृष्टिकोण–लोक प्रशासन के प्रबंधात्मक दृष्टिकोण के अनुसार मात्र प्रबंधात्मक क्रियाकलापों को ही इसके कार्यक्षेत्र में सम्मिलित किया जाता है तथा अन्य अप्रबंधकीय गतिविधियां, जैसे–तकनीक, लिपि एवं शारीरिक क्रियाकलाप आदि को समाहित नहीं किया जाता। संक्षेप में, लोक प्रशासन का प्रबंधात्मक दृष्टिकोण मात्र उच्च स्तरीय/प्रबंधकीय कार्यों को संदर्भित करता है तथा प्रत्येक स्थान पर एक ही प्रकार से प्रशासनिक गतिविधियां संपूर्ण की जाती हैं, क्योंकि प्रबंधकीय तकनीकें समान रूप से सर्वत्र प्रयोग की जाती है। **हरबर्ट साइमन** तथा **लूथर गुलिक** जैसे समाजशास्त्री इस दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं।

(ख) एकात्मक दृष्टिकोण–एल.डी. व्हाइट व **मार्शल ई. डिमाक** आदि विचारकों द्वारा समर्थित लोक प्रशासन का एकात्मक दृष्टिकोण उन सभी प्रबंधकीय, तकनीकी एवं शारीरिक क्रियाकलापों को सम्मिलित करता है, जो किसी दिए गए लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किए जाते हैं। प्रशासनात्मक गतिविधियों में किसी संबंधित अभिकरण की विषय-वस्तु द्वारा निर्धारित की जाती हैं। यही कारण है कि इनमें स्थान एवं स्वरूप के आधार पर भिन्नता पाई जाती है।

लोक प्रशासन का कार्यक्षेत्र–लोक प्रशासन के कार्यक्षेत्र को समझने हेतु दो दृष्टिकोण विकसित किए गए हैं–

(क) पोस्डकॉर्ब दृष्टिकोण तथा

(ख) विषयवस्तु-दृष्टिकोण

(क) पोस्डकॉर्ब (POSDCoRB) दृष्टिकोण–लोक प्रशासन के कार्यक्षेत्र का यह विधात्मक स्वरूप है, जिसका प्रचार तथा समर्थन **लूथर गुलिक** ने किया है। **लूधिर गुलिक** के अनुसार प्रशासन सात अवयवों से मिलकर बना है, जिन्हें संक्षेप में POSDCoRB के नाम से चिह्नित किया है। इनमें प्रत्येक अक्षर द्वारा प्रशासन को एक अवयव की व्याख्या की जा सकती है–

P (Planning) अर्थात नियोजन–परियोजना के ध्येय की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त तरीकों एवं कार्यों की विस्तृत रूपरेखा का निर्माण।

O (Organising) अर्थात् संगठन–सत्तात्मक संरचना का निर्माण, संगठन के प्राधिकरण की औपचारिक रचना, जो उद्देश्य की पूर्ति के लिए किए जाने वाले कार्यों को पूर्ण परिभाषित उप-भागों में व्यवस्थित तथा समन्वित करता है।

S (Staffing) अर्थात् नियुक्ति–संगठन में विभिन्न पदों पर उपयुक्त कार्मिकों की भर्ती एवं प्रशिक्षण तथा संपूर्ण कार्मिक प्रबधन।

D (Directing) अर्थात् निर्देशन–निर्णय लेना तथा कर्मचारियों के मार्गदर्शन के लिए आदेश तथा अनुदेश जारी करना।

Co (Co-ordination) अर्थात् समन्वय–संगठन में विभिन्न प्रभागों, अनुभागों एवं अन्य भागों के मध्य विवादों को दूर करना तथा परस्पर जोड़ना।

R (Reporting) अर्थात सूचित करना–वरिष्ठ अधिकारियों को अधीनस्थों द्वारा सूचित किया जाना; शोध, रिकार्ड एवं निरीक्षण के द्वारा सूचना संग्रह की व्यवस्था करना।

B (Budgeting) अर्थात बजट निर्माण–वित्तीय योजना निर्माण एवं नियंत्रण, लेखांकन आदि गतिविधियां संपूर्ण करना।

(ख) विषय-वस्तु दृष्टिकोण–पोस्डकॉर्ब दृष्टिकोण की कुछ आधारभूत कमियों के कारण विषय-वस्तु दृष्टिकोण का उदय हुआ। पोस्डकॉर्ब दृष्टिकोण के अनुसार प्रत्येक अभिकरण में समान प्रशासनिक समस्याएं पाई जाती हैं, जो प्रकार्यात्मक रूप से सही नहीं हैं। साथ ही पोस्डकॉर्ब दृष्टिकोण मात्र प्रशासनिक अंगों के बारे में बात करता है, जबकि प्रशासन की मूल वस्तु, जैसे–सुरक्षा शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी जनहित सेवाओं से अछूता ही रह गया है। ये सभी प्रशासनिक सेवाएं विशिष्ट तकनीकों से सन्निहित हैं। **गुलिक** की पोस्डकॉर्ब तकनीकों पर भी प्रशासनिक विषय-वस्तु का प्रभाव पड़ता है। विषय-वस्तु दृष्टिकोण प्रशासनिक अभिकरणों द्वारा प्रदत्त सेवाओं एवं कार्यों पर जोर देता है तथा इस तथ्य का अनुमोदन करते हैं कि अभिकरण की आधारभूत समस्याएं संबंधित विषय-वस्तु पर निर्भर करती हैं।

इस प्रकार, लोक प्रशासन, प्रशासनिक तकनीकों के साथ-साथ, प्रशासन के मूलभूत विषयों को भी सम्मिलित करता है। ये दोनों दृष्टिकोण परस्पर पूरक हैं तथा मिलकर लोक प्रशासन का उचित क्षेत्र बनाते हैं।

लोक प्रशासन तथा निजी प्रशासन के बीच संबंध

लोक प्रशासन सरकारी कार्यों से संबंधित है, जिनमें राज्य की नीतियों, कार्यक्रमों तथा निर्णयों की विधियों एवं कार्यनीतियों को सम्मिलित किया गया है। मुख्य रूप से, लोक प्रशासन का संबंध राजनीतिक परिस्थितियों से होता है, वहीं निजी प्रशासन, निजी व्यक्तियों के स्वामित्व तथा प्रबंध व्यवस्था से संबंधित है, जिसमें गैर-सरकारी एवं व्यापारिक उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है। यही कारण है कि लोक प्रशासन को बहुधा सरकारी प्रशासन

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

तथा निजी प्रशासन को व्यापारिक प्रशासन की भी संज्ञा दी गई है।

लोक प्रशासन तथा निजी प्रशासन में अंतर

विभिन्न विद्वानों एवं समाजशास्त्रियों, जैसे–पॉल एच. एपलबी (Paul H. Appleby), **सर जोसिया स्टॉम्प** (Sir Josia Stamp), **हरबर्ट ए. साइमन** (Herbert A. Simon) तथा **पीटर ड्रकर** (Peter Druker) आदि ने लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन को अलग-अलग अवधारणा बताया है। इनके बीच विभिन्न आधारों पर अन्तर किया जा सकता है–

	लोक प्रशासन	निजी प्रशासन
1. **प्रकृति**	सार्वजनिक/राजनैतिक	व्यक्तिगत/निजी गैर-राजनैतिक
2. **उद्देश्य**	सेवा भाव	लाभार्जन
3. **संचालन**	दृढ़ एवं स्पष्ट नियम, विनियम	सामान्य कानून
4. **राजनीतिक निदेशन**	स्पष्ट राजनीतिक निदेशन नौकरशाही नीति का कार्यान्वयन	केवल आपातकालीन स्थितियों में राजनैतिक निदेशन
5. **व्यवहार**	समरूप, निष्पक्ष	स्वतंत्र एवं भेदभावपूर्ण
6. **उत्तरदायित्व एवं नैतिक मापदंड**	उच्च एवं सतत	न्यूनतम
7. **स्वामित्व का अधिकार**	सरकार का एकाधिकार	एकाधिकार का अभाव
8. **कार्य-प्रकृति**	व्यापक, समाज की दृष्टि से अत्यधिक आवश्यक	अपेक्षाकृत कम व्यापक तथा महत्त्वपूर्ण
9. **कार्यकुशलता**	कम	अधिक

लोक प्रशासन तथा निजी प्रशासन के बीच समानताएं

प्रशासन के दोनों प्रकारों में निम्नलिखित समानताएं हैं–

1. **दक्षता आधारित** (Skill Bosed)–सरकारी और व्यापारिक, दोनों प्रशासन सामान्य दक्षताओं, तकनीकों और प्रक्रियाओं पर निर्भर हैं।
2. **लाभ अर्जन** (Earning of Profit)–वर्तमान में लाभ अर्जन का सिद्धान्त निजी प्रशासन तक ही सीमित नहीं है। इससे अब सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम भी प्रशंसनीय उद्देश्य के रूप में प्रभावित हुए हैं।
3. **व्यवहार का प्रभाव** (Effect of Behaviour)–कार्मिक प्रबंध में सार्वजनिक संगठनों के व्यवहार द्वारा निजी संगठन गहन रूप से प्रभावित हुए हैं।
4. **नियंत्रण** (Control)–निजी संस्थाएं भी विभिन्न कानूनी दबावों के अधीन हैं। सरकार नियामक विधायन; जैसे–कराधान, मौद्रिक और लाइसेंस नीतियों आदि के माध्यम से व्यापारिक कम्पनियों पर नियंत्रण रखती हैं। परिणामतः, वे पूर्ववत स्वतंत्र नहीं हैं।
5. **पदानुक्रम** (Hierarchy)–पदानुक्रम और प्रबंध प्रणालियों का प्रकार सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में एकसमान हैं।
6. **संगठन संरचना** (Organisation Structure)–दोनों की संगठन संरचना एक ही प्रकार की है; जैसे–अधीनस्थ संबंध आदि।
7. **कुशल सेवा** (Efficient Service)–दोनों प्रशासन– सरकारी और निजी, अपने आंतरिक कार्यकरण में सुधार हेतु और व्यक्तियों या ग्राहकों की सेवा कुशलतापूर्वक करने के प्रयास निरन्तर करते रहते हैं।
8. **सेवा भाव** (Feeling of Rendering Service)– सरकारी और निजी प्रशासन लोगों की, चाहें उन्हें मुवक्किल कहें या ग्राहक, सेवा करते हैं। दोनों को अपनी सेवाओं के संबंध में जानकारी देने और सेवाओं तथा उत्पाद के सम्बन्ध में प्रतिपुष्टि प्राप्त करने के लिए लोगों से निकट सम्बन्ध बनाये रखना आवश्यक होता है। दोनों मामलों में सार्वजनिक सम्बन्ध लोगों को अपनी सेवाओं की सूचना देने और सुधारने में सहायता प्रदान करता है।

स्पष्टतः सार्वजनिक और निजी प्रशासन के मध्य भिन्नता निरपेक्ष नहीं है। वास्तव में, वे बहुत से पक्षों में अधिकाधिक समान हो रहे हैं।

लोक प्रशासन का महत्त्व

वुड्रो विल्सन का कथन है कि निम्नलिखित कारणों से प्रशासन का अध्ययन महत्त्वपूर्ण हो गया है–

(i) समाज में बढ़ती हुई जटिलताएं,
(ii) राज्य के बढ़ते हुए कार्य,
(iii) लोकतांत्रिक पद्धतियों पर सरकारों की वृद्धि।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पद्धतियों की यह सूची विचार करती है कि किस प्रकार और कौन से दिशा-निर्देशों के द्वारा इन प्रक्रियाओं को भली प्रकार सम्पन्न किया जाना चाहिए। **विल्सन** का सुझाव है कि प्रशासनिक क्षेत्र में सरकार का सुधार करना आवश्यक है। उसके अनुसार प्रशासनिक अध्ययन का उद्देश्य यह खोज करना है कि

1. सरकार उचित ढंग से और सफलतापूर्वक क्या कर सकती है।
2. इन कार्यों को अधिकतम दक्षता और धन या ऊर्जा की न्यूनतम संभव लागत से किस प्रकार पूर्ण कर सकती है।

विशेषज्ञ विषय के रूप में लोक प्रशासन का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है–

1. व्यावहारिक चिंता–अनेक महत्त्वपूर्ण कारणों में एक कारण यह व्यावहारिक चिंता है कि सरकार को इस समय सार्वजनिक हित के लिए कार्य करना है। लोक प्रशासन का प्रमुख उद्देश्य प्रभावी ढंग से सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करना है। गत शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अनेक देशों ने प्रशासन की समस्याओं पर विचार करने तथा विविध सार्वजनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु उपर्युक्त प्रशासनिक मशीनरी की सिफारिश करने के लिए समितियां नियुक्त कीं। लोक प्रशासन में परिवर्तन करने के लिए विभिन्न देशों द्वारा किए गए प्रयासों के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं–

(i) ब्रिटेन में हेल्डेन (Haldane) समिति (1919),
(ii) संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रशासनिक प्रबंध पर राष्ट्रपति की समिति (1937),
(iii) भारत में **ए.डी. गोरवाला समिति** और **पाल एच.एप्पलबी** की रिपोर्ट तथा गत चार शताब्दियों के दौरान भी विभिन्न देशों में सरकारों या बहुपक्षीय एजेंसियों द्वारा नियुक्त समितियों/ आयोगों द्वारा तैयार की गईं। अनेक रिपोर्टों और विद्वानों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों ने इस विधा को समृद्ध किया। इसके अतिरिक्त समयानुसार परिवर्तित होती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए लोक प्रशासन को नई संभावनाएं प्रदान की हैं; जैसे–
   (क) सिविल सेवाओं पर कमेटी (फल्टन समिति रिपोर्ट, 1968) की रिपोर्ट,
   (ख) प्रशासनिक सुधार आयोग की विभिन्न रिपोर्टें (भारत, 1967-72),
   (ग) पुन: आविष्कारी सरकार (यू.एस.ए. पुस्तक–डेविड ओसबोर्न और टेड **गैब्लर**-1992),
   (घ) शासन और टिकाऊ विकास (यू.एन.डी.पी., 1997) तथा विश्व विकास रिपोर्ट बाजारों के लिए संस्थाओं का निर्माण (विश्व बैंक, 2002)।

2. समाज पर प्रभाव का अध्ययन–सामाजिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में प्रशासन को सहकारी और सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में देखा गया है। अतएव शैक्षिक जिज्ञासा का विषय समाज पर सरकार की नीतियों और कार्यों का प्रभाव समझना आवश्यक है; जैसे–

(i) समाज किस प्रकार की नीतियों पर विचार करता है।
(ii) किस सीमा तक प्रशासनिक कार्रवाई भेदभाव रहित हो सकती है,
(iii) लोक प्रशासन किस प्रकार कार्य कर रहा है और
(iv) सामाजिक संरचना अर्थव्यवस्था और राजनीति पर सरकारी कार्रवाई का तात्कालिक और दीर्घकालिक क्या प्रभाव है।

3. विकासशील देशों में विशेष प्रस्थिति–विकासशील देशों में लोक प्रशासन को विशेष प्रस्थिति प्राप्त है। इन देशों में से अनेक देशों ने औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शीघ्र सामाजिक-आर्थिक विकास पर बल दिया है। इस प्रकार की स्थिति में इन देशों को शीघ्र विकास हेतु सरकार पर निर्भर रहना आवश्यक है।

सरकार के लिए लोक प्रशासन को व्यवस्थित करना और उत्पादकता को द्रुत गति से बढ़ाने के प्रभावी तरीकों का संचालन करना आवश्यक है। इसी प्रकार, सामाजिक कल्याणकारी कार्यों का निष्पादन भी प्रभावी ढंग से किया जाना चाहिए। इन पक्षों ने विकास प्रशासन की नई उपविधा को जन्म दिया है। विकास प्रशासन का आविर्भाव इस अनुभूति का सूचक है कि तीसरे विश्व के प्रशासन का अध्ययन किस प्रकार किया जाए। सरकार के हस्तक्षेप में शीघ्र सामाजिक-आर्थिक विकास किस प्रकार किया जाए। इसके लिए समुचित जानकारी की आवश्यकता अनुभव हुई। इस प्रकार, विकास के उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु विकास प्रशासन का आविर्भाव उप-विधा के रूप में हुआ।

4. जनजीवन पर प्रभाव–वस्तुत: लोगों के जीवन में लोक प्रशासन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह उन पर प्रत्येक पग पर प्रभाव डालता है। अपनी अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु लोग लोक प्रशासन पर निर्भर रहते हैं। लोगों के जीवन में लोक प्रशासन की महत्त्वपूर्ण भूमिका के दृष्टिगत देश के नागरिक इसकी उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। अतएव इसका शिक्षण शैक्षिक संस्थाओं की पाठ्यचर्या का भाग हो गया है। लोगों को निम्नलिखित के सम्बन्ध में बताया जाना चाहिए–

(i) सरकार की संरचना के सम्बन्ध में,
(ii) कार्य के संबंध में, जो वह आरंभ करती है और
(iii) उस तरीके के संबंध में, जिसमें उन क्रियाओं को वास्तव में निष्पादित किया जाता है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. लोक प्रशासन के अर्थ की चर्चा कीजिए।

उत्तर–शब्द 'एडमिनिस्टर' (Administer) की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'Administere' से हुई है, जिसका अर्थ इस प्रकार है–

(i) लोगों की देखभाल करना,
(ii) कार्यों का प्रबंध करना।

प्रशासन कार्यकलापों का ऐसा वर्ग है, जिसमें वांछित लक्ष्यों या उद्देश्यों को प्राप्त करने के प्रयोजन के लिए सहयोग और समन्वय अंतर्निहित होता है।

स्थूल रूप से प्रशासन शब्द के लगभग चार भिन्न-भिन्न अर्थ या भिन्न भाव हैं, जो उस सन्दर्भ पर निर्भर हैं, जिसके लिए यह प्रस्तुत किया जाता है–

www.neerajbooks.com